International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सावित्री बाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण

रश्मि
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र विभाग)
ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर (उ.प्र.-भारत)

सारांश :

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सावित्री बाई फुले का योगदान महत्वपूर्ण है। शिक्षा के प्रति उनका दार्शनिक दृष्टिकोण समकालीन समय में और भी प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षा, सामाजिक सुधार और महिला सशक्तिकरण पर उनके विचार और भारतीय समाज पर उनके प्रभाव पर चर्चा की जाएगी। यह शोध पत्र शिक्षा के प्रति सावित्रीबाई फुले के दार्शनिक दृष्टिकोण, वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता और भारतीय शिक्षा प्रणाली पर इसके प्रभाव का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। यह शोध पत्र सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचारों की दार्शनिक नींव और भारत में समकालीन शिक्षा के लिए इसके निहितार्थ का पता लगाने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों का उपयोग करता है। यह शोध उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करने के लिए नारीवादी, उत्तर-औपनिवेशिक और आलोचनात्मक शिक्षा-शास्त्र सहित कई सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर आधारित है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा समाज के हाशिये पर पड़े और उत्पीड़ित वर्गों, विशेषकर महिलाओं के उत्थान और लैंगिक समानता के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है।

मुख्य शब्द : दार्शनिक दृष्टिकोण, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, सामाजिक सुधार, समकालीन शिक्षा प्रणाली।

प्रस्तावना:

सावित्रीबाई फुले (1831-1897) एक भारतीय समाज सुधारक और शिक्षिका थीं, जिन्होंने भारत में शिक्षा प्रणाली, विशेषकर लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा, स्वतंत्रता, सामाजिक सहभागिता और स्वावलंबन के लिए अथक प्रयास किया। वह भारत की पहली महिला शिक्षिका के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने पुणे (महाराष्ट्र) में लड़कियों के लिए पहले गर्ल्स स्कूल की स्थापना अपने पति ज्योतिबा राव फुले के साथ मिलकर 1848 में की, जो भारत में महिलाओं की शिक्षा की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में सावित्रीबाई फुले का काम भारतीय समाज और इसकी शिक्षा प्रणाली को आकार देने में सहायक रहा है। शिक्षा के प्रति उनका दार्शनिक दृष्टिकोण सामाजिक समानता, तर्कसंगतता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित था। जाति, वर्ग या लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के उनके प्रयास क्रांतिकारी थे और उन्होंने प्रचलित सामाजिक मानदंडों और परंपराओं को चुनौती दी। सावित्रीबाई फुले भारत में महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थीं। वह पहली आधुनिक भारतीय नारीवादी थीं, जो महिलाओं के अधिकारों के लिए खड़ी हुईं और विधवाओं द्वारा सिर मुंडवाने के खिलाफ भी लड़ाई लड़ीं। लड़कियों और महिलाओं को शिक्षित करने के उनके प्रयासों को पितृसत्तात्मक समाज के विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन वे अपने संकल्पों पर ताउम्र कायम रहीं और तमाम संघर्षों को झेलते हुए भी वंचितों तथा महिलाओं को शिक्षा और उनके अधिकारों को दिलाने के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

शिक्षा के प्रति सावित्री बाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों में गहराई से निहित है। उनका शैक्षिक विचार सामाजिक हाशिए पर होने, भेदभाव और उत्पीड़न के उनके अनुभवों के साथ-

साथ सामाजिक सुधार और मुक्ति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता से प्रेरित था। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों और समाज को अज्ञानता और असमानता के बंधनों से मुक्त कराने की एकमात्र कुंजी है।

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सावित्री बाई फुले के दार्शनिक दृष्टिकोण तथा क्रांतिकारी कार्यों के प्रभाव से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना, उनका विश्लेषण करना तथा वर्तमान एवं भविष्य के परिदृश्य में उसकी प्रासंगिकता पर विचार करना है।

शोध अध्ययन की विधि:

इस शोध पत्र के लिए अपनाई गई शोध पद्धति की प्रकृति गुणात्मक है। जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का महत्वपूर्ण विश्लेषण शामिल है। प्राथमिक स्रोतों में सावित्रीबाई फुले के स्वयं के लेख, पत्र और भाषण शामिल हैं। जबकि द्वितीयक स्रोतों में लेखकों द्वारा सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचार और महत्वपूर्ण कार्यों पर आधारित विद्वतापूर्ण लेख, पुस्तकें, शोध पत्र, और इंटरनेट आदि माध्यमों से प्राप्त प्रासंगिक साहित्य शामिल हैं।

साहित्य की समीक्षा:

साहित्य की समीक्षा में सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचारों के प्रमुख विषयों और अवधारणाओं की पड़ताल की गई है, जिसमें सामाजिक सुधार के साधन के रूप में शिक्षा पर उनके विचार, महिलाओं की शिक्षा का महत्व और सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका शामिल है। शिक्षा के माध्यम के रूप में स्थानीय भाषा को प्राथमिकता देने संबंधी उनके विचार को तर्कसंगत ठहराया गया है। समीक्षा में उनके दृष्टिकोण की आलोचनाओं की भी जांच की गई है, जिसमें तकनीकी शिक्षा की कथित उपेक्षा की आलोचनाएं भी शामिल हैं।

साहित्य में सावित्री बाई फुले का कार्य:

सावित्री बाई फुले एक महान क्रांतिकारी लेखिका और पहली मराठी कवयित्री थीं, जिन्होंने सामाजिक मुद्दों और महिलाओं के अधिकारों पर विस्तार से लिखा। दुर्भाग्य से, उनकी कई रचनाएँ समय के साथ लुप्त हो गईं और उनकी केवल कुछ रचनाएँ ही संरक्षित रह पाई हैं। यहां सावित्री बाई फुले की कुछ किताबें और लेख उपलब्ध हैं:

1. **काव्य फुले (1854) :**

   मात्र 23 वर्ष की आयु में सावित्री बाई फुले द्वारा लिखित कविताओं का संग्रह है।जिसका केंद्र बिंदु सामाजिक सामाजिक मुद्दे और स्त्री की दुर्दशा है। संग्रह में उन्होंने धर्म, धर्मशास्त्र, धार्मिक पाखंडों और कुरीतियों के खिलाफ भी ख़ूब जमकर लिखा। औरतों की सामाजिक स्थिति पर कविताएं लिखीं और उनकी बुरी स्थिति के लिए जिम्मेदार धर्म, जाति, ब्राह्मणवाद और पितृसत्ता पर कड़ा पर प्रहार किया।

2. **बावन काशी सुबोध रत्नाकर (1892) :**

   सावित्री बाई फुले द्वारा लिखित 52 कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह की कविताएँ सामाजिक समानता, महिलाओं के अधिकारों और जातिगत भेदभाव के उन्मूलन में उनके दृढ़ विश्वास को दर्शाती हैं।

3. **मातु श्री सावित्री बाई फलेंचि भाषणें वा गाणी :**

इसमें सावित्री बाई फुले के गीत और भाषणों का संग्रह है।

4. **ज्योतिबांची भाषाणें खण्ड 1 से 4 :**

यह सावित्री बाई द्वारा संपादित महात्मा ज्योतिबा राव फुले के भाषणों का संग्रह है।

ये सावित्री बाई फुले की कुछ किताबें और लेख हैं जो उपलब्ध हैं। हालाँकि उनके अधिकांश कार्य समय के साथ खो गए हैं, लेकिन जो कुछ संरक्षित किए गए हैं वे उनके जीवन, उनके संघर्षों और भारतीय समाज में उनके योगदान के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

विश्लेषण:

सावित्री बाई फुले के शैक्षिक विचारों के विश्लेषण से एक जटिल और बहुआयामी दृष्टिकोण का पता चलता है। जिसने सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि व्यक्तिगत और सामूहिक चेतना के विकास और सामाजिक असमानताओं और पूर्वाग्रहों के उन्मूलन के लिए शिक्षा आवश्यक है। महिलाओं की शिक्षा पर सावित्री बाई फुले का जोर प्रचलित सामाजिक मानदंडों और परंपराओं से बिल्कुल हटकर था, जो महिलाओं को पुरुषों से हीन और अधीनस्थ मानते थे। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं की शिक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत विकास और सशक्तिकरण के लिए बल्कि पूरे समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा सभी के लिए समावेशी और सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी जाति, वर्ग या लिंग कुछ भी हो।

शिक्षा के माध्यम के रूप में स्थानीय भाषाओं के उपयोग पर सावित्री बाई फुले का जोर भी महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने अंग्रेजी और संस्कृत के प्रभुत्व को चुनौती दी थी, जिन्हें अभिजात्य वर्ग की भाषा माना जाता था। उनका मानना था कि स्थानीय भाषाओं का उपयोग न केवल शिक्षा को अधिक सुलभ बनाएगा बल्कि छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों और विरासत से जुड़ने में भी सक्षम बनाएगा।

हालाँकि, संस्कृत शिक्षा पर सावित्रीबाई फुले के जोर की कुछ विद्वानों ने आलोचना की है, जो तर्क देते हैं कि यह प्राचीन हिंदू संस्कृति और परंपराओं को पुनर्जीवित करने का एक प्रयास था। कुछ आलोचकों का यह भी तर्क है कि उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने तकनीकी शिक्षा की उपेक्षा की, जो आधुनिक उद्योगों और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए आवश्यक थी।

सावित्री बाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण:

शिक्षा के प्रति सावित्री बाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण सामाजिक समानता के विचार पर आधारित है। उनका मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी जाति, लिंग या धर्म कुछ भी हो। लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित करने के उनके प्रयास उनके इस विश्वास से प्रेरित थे कि महिलाओं की शिक्षा उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा तर्क संगतता और वैज्ञानिक सोच पर आधारित होनी चाहिए, न कि अंधविश्वास पर।

शिक्षा के प्रति सावित्री बाई फुले का दृष्टिकोण भी उनके सामाजिक सुधार एजेंडे में गहराई से निहित था। उनका मानना था कि जातिवाद, अस्पृश्यता और पितृसत्ता जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण हो सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में उनके काम का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जो इन बुराइयों से मुक्त हो और सामाजिक समानता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो। शिक्षा के प्रति सावित्रीबाई फुले का दृष्टिकोण भी

महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित था। उनका मानना था कि महिलाओं की शिक्षा उनके आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा महिलाओं को पितृसत्ता की बेड़ियों से मुक्त होने और एक ऐसे समाज का निर्माण करने में मदद कर सकती है जो अधिक लिंग-समान हो।

दूसरे शब्दों में, सावित्री बाई फुले का शिक्षा दर्शन सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों और समुदायों, विशेषकर महिलाओं को सशक्त बनाने का एक साधन है, जो सदियों से उत्पीड़ित और हाशिए पर थीं। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण समग्र था, जो छात्रों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण पर जोर देता था। सावित्री बाई फुले के शैक्षिक दर्शन का एक प्रमुख पहलू यह था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ हो। उन्होंने समाज के बहुजन वर्ग को शिक्षा से वंचित करने में गरीबी और सामाजिक भेदभाव की भूमिका को पहचाना और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में काम किया। उनका मानना था कि शिक्षा किसी भी प्रकार के भेदभाव से मुक्त होनी चाहिए।

सावित्री बाई फुले ने स्कूलों में नैतिक शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि शिक्षा को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करना चाहिए बल्कि छात्रों में नैतिक मूल्यों को भी स्थापित करना चाहिए। उनका मानना था कि जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए नैतिक शिक्षा आवश्यक है जो समाज में अपना सकारात्मक योगदान दे।

सावित्री बाई फुले के शैक्षिक दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होना आवश्यक है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यावहारिक और उपयोगी होनी चाहिए और छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करना चाहिए। उन्होंने अकादमिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यावहारिक कौशल के महत्व पर जोर दिया। यह आश्चर्यजनक लग सकता है लेकिन आर.टी.ई. अधिनियम और मध्याह्न भोजन योजना की अवधारणा 170 साल पहले 1850 में सावित्री बाई फुले ने ही दी थी। रात्रि विद्यालय की अवधारणा भी उन्होंने ही दी थी। क्योंकि वह शिक्षा के रास्ते में आने वाली हर बाधा को खत्म करना चाहती थी। आज की शिक्षा में आर.टी.ई. अधिनियम, एम.डी.एम., अभिभावक-शिक्षक बैठक, समृद्ध पुस्तकालय और 'कमाओ तथा सीखो' जैसी नई अवधारणाएं हैं। लेकिन जब हम सावित्री बाई फुले के कार्यों को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि उन्होंने इन सभी अवधारणाओं का उपयोग एक ही समय में अपने शैक्षिक कार्यों में किया था। इस प्रकार, यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सावित्रीबाई फुले आधुनिक भारतीय शिक्षा की जननी हैं।

सावित्री बाई फुले के दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रभाव:

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सावित्री बाई फुले का योगदान अतुलनीय रहा है। लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित करने में उनका काम एक अग्रणी कदम था।

देश में महिला शिक्षा. सामाजिक समानता, तर्कसंगतता और सशक्तिकरण पर उनके जोर का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है । जातिवाद, धार्मिक पाखंड और पितृसत्ता जैसी सामाजिक बुराइयों को उनके द्वारा दूर करने के प्रयासों का भी भारतीय समाज पर स्थायी प्रभाव पड़ा है।

शिक्षा के प्रति सावित्री बाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण वर्तमान समय में और भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद भी अभी कई चुनौतियाँ हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। लैंगिक

असमानता, जाति-आधारित भेदभाव और शिक्षा तक पहुंच की कमी जैसे मुद्दे भारतीय शिक्षा प्रणाली को किसी न किसी रूप में अभी भी प्रभावित कर रहे हैं। शिक्षा के प्रति सावित्री बाई फुले का दृष्टिकोण, जोसामाजिक समानता, तर्क संगतता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित है, वह इन चुनौतियों से निपटने में एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकता है।

निष्कर्ष:

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सावित्री बाई फुले का योगदान अतुलनीय है। उनका शैक्षिक दर्शन सामाजिक न्याय, समानता, के सिद्धांतों पर आधारित है ।

और महिला सशक्तिकरण, और शिक्षा को सर्व-सुलभ, प्रासंगिक और समग्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। सावित्री बाई फुले एक दूरदर्शी और शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अग्रणी थीं। यह सावित्री बाई फुले के संघर्षों का ही परिणाम है कि आज भारतीय महिलाएं स्वतंत्र रूप से पढ़ सकती हैं, अपना करियर बना सकती हैं और सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में उनका योगदान भारत और दुनिया भर में लाखों लोगों के लिए प्रेरणा है। शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण ने शिक्षकों और समाज सुधारकों की पीढ़ियों को प्रेरित किया है और आज भी उतना ही प्रासंगिक बना हुआ है।

सुझाव -

1. आज हम 21वीं सदी में हैं। लेकिन "बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ" का नारा आज भी हमारी लैंगिक असमानता वैचारिक पिछड़ेपन का परिचायक है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा तथा सामाजिक उत्थान के लिए सावित्री बाई फुले के विचारों को पाठ्यक्रम में पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए।

2. शिक्षा हमारे मौलिक अधिकारों में शामिल है। इसके बावजूद भारतीय समाज का एक बड़ा तबका एक तरफ जहां अशिक्षित है, वहीं दूसरी तरफ पढ़ा - लिखा तबका भी संवैधानिक तथा सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक नहीं है। ऐसे में सावित्री बाई फुले के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जाना चाहिए।

3. आधुनिक शिक्षा के सभी आयामों में सावित्री बाई फुले प्रासंगिक बैठती हैं। अतः उनके शैक्षिक विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में दृष्टिगत रख जाना चाहिए।

4. शिक्षाविदों को चाहिए कि सावित्री बाई फुले के शैक्षिक योगदानों, सामाजिक योगदानों और क्रांतिकारी विचारों पर प्रचुर मात्रा में शोध कार्य कराएं। इनसे संबंधित कार्यशालाओं तथा गोष्ठियों का आयोजन समय-समय पर कराया जाए। ताकि वर्तमान तथा आगामी पीढ़ियां उनके जीवन दर्शन से प्रेरणा लेकर शिक्षा तथा समाज को बेहतर बनाने में सार्थक योगदान कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. शिंदे, एम.आर. (2017)।सावित्रीबाई फुले: महिलाओं का एक प्रेरक व्यक्तित्व भारत में सशक्तिकरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस और मानविकी अनुसंधान, 5(1), 01-08।

2. धमाले, डी.के. (2018) । सावित्रीबाई फुले : महिला शिक्षा की अग्रदूत
भारत। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च । 7(2). 13-19.

3. राव, एम.जी.(2016)।सावित्रीबाई फुले: भारत की पहली महिला शिक्षिका। आईओएसआर
जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस, 2 1(11), 61-65।

4. बसु, टी.(2018)। सावित्रीबाई फुले और भारत में महिला शिक्षा के लिए संघर्ष। जर्नल ऑफ सोशल एंड
पॉलिटिकल साइंसेज, 1(1), 11-18।

5. अम्बेडकर, बी.आर. (1989)। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर: लेखन और भाषण। वॉल्यूम. 3. शिक्षा. शिक्षा विभाग। महाराष्ट्र सरकार.मुंबई ।

6. शाक्य, रश्मि (2019)। क्रांति-ज्योति : सावित्री बाई फुले जीवन चरित पर आधारित खण्ड-काव्य। साहित्यगंधा प्रकाशन, लखनऊ ।

7. भारती, अनिता (2015)। 'सावित्री बाई फुले की कविताएं', स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली ।